



Original Article

हिंदी साहित्य में समस्याओं का चित्रण (वीरेंद्र जैन के उपन्यासों के संदर्भ में)

प्रा. (डॉ.) विनायक बापू कुरणे

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग

बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण, जि. सातारा

Manuscript ID:

IJAAR-C130308

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 34 - 38

Submitted: 17 Jan. 2026

Revised: 22 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रा. (डॉ.) विनायक बापू कुरणे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774649

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774649>



Creative Commons



सार:

आधुनिक काल में भ्रष्टाचार एक जटिल सामाजिक समस्या है, जो सभी समाज को प्रभावित करती है। वीरेंद्र जैन ने अपने उपन्यास में समाज जीवन में होनेवाली कई सामाजिक समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। इसमें भ्रष्टाचार की समस्या का चित्रण प्रमुखता हुआ है। भ्रष्टाचार सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में समान रूप से व्याप्त है। 'डूब' उपन्यास में सत्ता, प्रशासन, राजनीति और समाज पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुका है। 'पंचनामा' उपन्यास में अनाथाश्रम में छात्रों से लेकर अधीक्षक, आश्रम का प्रधानमंत्री तक भ्रष्टाचार करते हुए दिखाई देता है। 'सबसे बड़ा सिपाहिया' उपन्यास में भारतीय पुलिस विभाग में हो रहे भ्रष्टाचार का चित्रण है। शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है जिसका चित्रण 'शब्द - बध' उपन्यास में है। इन उपन्यासों में हुए भ्रष्टाचार का लेखा-जोखा इस शोधलेख में किया गया है।

मुख्य शब्द: विधिसम्मत, मुआवजा, घूस, अनाथाश्रम, पुलिस

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रा. (डॉ.) विनायक बापू कुरणे. (2026). हिंदी साहित्य में समस्याओं का चित्रण (वीरेंद्र जैन के उपन्यासों के संदर्भ में). *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 34 - 38. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774649>

प्रस्तावना:

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह जिस समाज में रहता है वहाँ विभिन्न समस्याएँ दिखाई देती हैं। "सामाजिक समस्या घटनाओं का समूह या दशा है, जिसे समाज में कुछ लोग अवांछित मानते हैं। समाज के एक वर्ग या समूह के समक्ष

उत्पन्न स्थिति, जिसके हानिकारक परिणाम होते हैं और जिससे केवल सामूहिक प्रयासों से ही निबटा जा सकता है, को सामाजिक समस्या के रूप में परिभाषित किया जा सकता है (रोनहार्ट, 1952 : 14)" 1 मनुष्य अपनी रोजमर्रा की जरूरतें पूरी करने के लिए दौड़धूप करता है लेकिन व्यक्ति की जरूरतें



जैसे - जैसे बढ़ती हैं वैसे - वैसे सामाजिक समस्याएँ अपना उग्र रूप धारण करने लगती हैं। मनुष्य जीवन का कोई भी कोना ऐसा नहीं जहाँ आज समस्याओं का अस्तित्व न हो। मनुष्य जीवन की समस्याएँ उसकी चित्तवृत्तियों के विकास के साथ - साथ निरंतर बढ़ती चली जा रही हैं। मनुष्य की इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती हैं, यही अतृप्ति कालान्तर में जीवन में समस्याओं का जाल - सा फैला देती है। वर्तमान युग में तो समस्याएँ इतनी बढ़ गई हैं कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्याओं की श्रृंखला हो गया है। "समस्याओं का स्वरूप आज मकड़ी के उस जाल सदृश्य लग गया है जो देखने में तो अलग - अलग तंतुमय ही दिखाई देते हैं परन्तु एक दूसरे से इस तरह निगुन्थित है कि उन्हें अलग किया ही नहीं जा सकता।" 2 वीरेन्द्र जैन ने अपने उपन्यास में समाज जीवन में होनेवाली कई सामाजिक समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। भ्रष्टाचार की समस्या का चित्रण प्रमुखता से किया है।

शोध विषय का विश्लेषण:

आधुनिक काल में भ्रष्टाचार एक जटिल सामाजिक समस्या है, जो सभी समाज को प्रभावित करती है। जीवन के सभी क्षेत्रों में हमें इसका शिकार होना पड़ता है। भ्रष्टाचार सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में समान रूप से व्याप्त है। भ्रष्टाचार के कलंक से जीवन का कोई भी कोना अछूता नहीं है। आज, भ्रष्टाचार ने एक आम समस्या का ऐसा रूप ग्रहण कर लिया है, कि यहां तक कि विधिसम्मत कार्य करवाने के लिए भी लोग घूस दिए जाने से परहेज नहीं करते।" भ्रष्टाचार ऐसा व्यवहार है, जो निजी लाभ के लिए सार्वजनिक भूमिका अथवा पद के उपयोग को शासित करने वाले मानदंडों एवं कर्तव्यों से किया गया विचलन हो (मेशेल, 1983 में उद्धृत)।" 3 भ्रष्टाचार भारतीय समाज के प्रत्येक अंग

में अपनी जड़ें फैला चुका है। यहाँ का प्रत्येक मानव भ्रष्टाचार की दुर्गंध में साँस ले रहा है। वह सत्य व श्रेष्ठ आचरण की सुगंध को भूल गया है। सत्ता, प्रशासन, राजनीति और समाज पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुका है।

आज समाज में कई ऐसे दलाल मौजूद हैं जो अधिकारी लोगों से सांठ - गांठ बाँधकर भ्रष्टाचार को पाल रहे हैं। 'डूब' उपन्यास में बांध बनावाने के लिए अपना सर्वस्व त्याग करने वाले लोगों को अपने जायदाद का मुआवजा पाने के लिए घूस देनी पड़ती है। लोगों को जमीन का मुआवजा देने के लिए एक दफ्तर खोला जाता है। "दो बरस पीछे एक रोज, वहीं साव को मालूम हुआ कि सरकार अब राजघाट के इस तरफ भी मुआवजा बाँटने जा रही है। इसके लिए चंदेरी में बाकायदा एक नया दफ्तर खोजा जायेगा। वहाँ भू - अर्जन अधिकारी और उनके साथ पूरा महकमा होगा। वह रात - दिन मुआवजे का काम देखेगा। मुआवजा बाँटेगा। मुआवजा तय करेगा।" 4 निर्मल साव भू - अर्जन अधिकारी से मिलकर उलटफेर करवा लेते हैं। भू - अर्जन अधिकारी सिंचित और असिंचित जमीन का अलग - अलग मुआवजा तय करते हैं। निर्मल साव दफ्तर के बाबू लोगों से मिलकर असिंचित जमीन का मुआवजा भी सिंचित जमीन की मुआवजे के दर से देने के लिए किसानों से रिश्वत माँगते हैं- "ढेरों उपाय किए, सैकड़ों दलीले दीं, तब अंत में यह तय हुआ के चाहे वह सिंचित भूमि दर्शाई गई हो कागज में या असिंचित, खेतिहर जमीन हो या बंजर, या हो रिहायशी, खेत बचा हो या नदी में समा गया हो, उस पर चारा उगता हो या टपरा खड़ा हो, सब तरह की जमीनों का मुआवजा सोलह सौ रुपए प्रति बीघा की दर से मिलेगा। हाँ बदले में उन बाबुओं को प्रति "भू - अर्जन अधिकारी के दफ्तर के बीघा छ : सौ रुपया हम अपनी गाँठ से देंगे।" 5 बाबू, चपरासी सभी भ्रष्टाचारी हैं। वे कुछ लिए बिना काम नहीं करना



चाहते। दफ्तर में जाने के लिए भी चपरासी किसानों से घूस लेता है। किसानों को खाली हाथ आया देखकर उनसे अन्य चीजें पाने की आशा बाबू लोग रखते हैं- “अरे और कुछ नहीं था तेरे पास तो कम - से - कम बेर , डूंगरा , खिन्नी , तेंदू , अचार , आम या कैंत ही ले आया होता। बहुत दिन हो गये बच्चों को फल खाए।”⁶ चपरासी से लेकर दफ्तर के प्रधान अधिकारी तक घूस लिए बिना काम करना ख्वाब समझा जाता है।

भ्रष्टाचार जीवन के हर क्षेत्र में व्याप्त है। अनाथाश्रम भी इससे बचा नहीं है। 'पंचनामा' उपन्यास में अनाथाश्रम में छात्रों से लेकर अधीक्षक , आश्रम का प्रधानमंत्री तक भ्रष्टाचार करते हुए दिखाई देता है। अकलंक को नये जूते खरीदे जाते हैं। उसके साथ सुरेश जूतों की दुकान पर जाता है। सुरेश उसके लिए काले जूते और एक पालिस की डिब्बी खरीद कर देता है। और जो भुगतान करता है उससे कहीं ज्यादा का पर्चा बनवाता है। और 'किसी से कहना नहीं' की हिदायत भी देता है। आश्रम के अधीक्षक भ्रष्टाचारी है। उपन्यासकार उसके बारे में लिखते हैं- “दरअसल अधीक्षक जिस दुकान से कपड़े लाया है, वहाँ कहकर आया है- कि जो कपड़े छोटे - बड़े रह जाएँगे, वे वापस कर दिए जाएँगे। अब सबके सामने तो दिए हैं। बाद में छीनकर पुराने, धुले कपड़े पकड़ा दिए जायेंगे। इस तरह जितने कपड़े इकट्ठे हो जायेंगे, सब वापस कर दिए जाएँगे। बिल पूरे कपड़ों का बन ही चुका है। लौटी हुई रकम अधीक्षक रख लेगा।”⁷

आश्रम के अधिकारी भ्रष्ट और बेइमान हैं। विनय इसके बारे में कहता है, “हमारे एक अधीक्षक ने जो कपड़ा था उससे अपने बच्चों की पैटे सिलवा दी। शेष कपड़े से आश्रम के लड़कों की पैटे सिलवा दी। जाहिर है सबकी पैटें छोटी बनीं। लड़को ने अधीक्षक से शिकायत की अधीक्षक ने शर्मिंदा होने

के बजाए लड़कों को भला - बुरा कहना शुरू कर दिया। बात - बेबात उन्हें दंडित करने के बहाने ढूँढ़ने लगा। यही नहीं, वह लड़कों के लिए आने वाली प्रायः सभी चीजों में से आधी में से आधी से ज्यादा चीजें अपने परिवार के लिए हड़पने लगा।”⁸

भारतीय पुलिस विभाग भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी में अव्वल स्थान पर है। इसमें रिश्वतखोरी और घूसखोरी का बोलबाला है। अपराधियों और अफसरों के बीच एक गहरी साँठगाँठ दिखाई देती है। भारत में राजनीतिज्ञों, अफसरों वा अपराधियों के बीच एक गहरी साँठगाँठ चल रही है उसके कारण हर वर्ष सार्वजनिक कोष को हजारों करोड़ रुपये की क्षति उठानी पड़ती है। 'सबसे बड़ा सिपाहिया' उपन्यास में उपन्यास नायक आनंद जब रिपोर्ट करवाने जाता है तो थाने का डी.ओ. सिपाहीं जगताराम से उसके नाम की चाय और विल्स रॉयल सिगरेट की डिब्बी बिना उसकी सहमति से मंगवा लेता है। “रामधन, तूने तो नहीं मंगाया?” रामधन झुंझलाया, “नहीं तो, मैं क्यों मंगाता? मैं कोई रपट दर्ज करने आया हूँ जो तुम्हारी खुशामद में।” अपनी बात पूरी न करके वह आनंद की तरफ मुड़ा और उसे उंगली से टोहना मारकर पूछा, “आपने मंगाया है न?”⁹

पुलिस के पास यदि कोई फरियादी, जब कोई व्यक्ति रिपोर्ट लिखवाने जाता है तो पुलिस उसी से कागज, कार्बन और पेन मंगवाती है। प्रस्तुत उपन्यास में डी.ओ. फरियादी से कहता है, “अगर तुम्हारे पास दस रुपये हों तो इस मुंशी को दे दो। यह बाजार से कागज, फरियादी का चहेरा फिर खिल उठा। उसने तुरंत दस दस का नोट मुंशी के हाथ पर रख दिया। डी.ओ. ने आनंद को भी चेताया, “तुझे भी तो रिपोर्ट लिखवानी है। तू भी दो रुपये दे।”¹⁰

पुलिस के साथ रिश्वतखोरी का चोली - दामन जैसा साथ रहता है। पुलिस विभाग में पैसे का लेन - देन खुलेआम



चलता रहता है। कोई काम पैसे के बिना नहीं होता। सिपाहीं, थानेदार से लेकर एस.पी. तक रिश्ततखोरी की एक चेन होती है। सिपाही कमाये तो उसमें से कुछ हिस्सा थानेदार को भी दे देता है। थानेदार कमाये तो उसमें से कुछ हिस्सा एस.पी. तक पहुँचाया जाता है। 'सबसे बड़ा सिपहिया' उपन्यास में थानेदार जब एस.पी. के दफ्तर में जाता है तब एस.पी. पूछता है, "खैर, इसे छोड़, ये बता, तूने राजाराम से पाँच में ही तय किया था या कुछ ज्यादा में?" "पंद्रह हजार में।" "तो क्या मेरे हिस्से में पाँच ही आए? अबे, मैंने तो लंबी उम्मीद बाँधकर मकान का काम शुरू कर दिया और इधर तू बिलकुल चुप ही लगा गया।"

11

वेश्या, बुरे काम करने वाले डॉक्टर से पुलिस घूस लेती है। 'व्यथा - कथा' उपन्यास में सहजानंद एक लड़की का गर्भपात कराने आता है। डॉक्टर उसे पुलिस के हवाले करता है। "मगर पुलिस सहजानंद का कुछ न बिगाड़ सकी। वह दे-दिलाकर छूट गया।" 12 वेश्याओं के कोठा के इर्द-गिर्द पुलिस घूमती रहती है। ताकि किसी जिस्म फरोशी के लिए आए आदमी को डरा-धमकाकर उससे कुछ रुपया वसूल किया जाए। 'व्यथा - कथा' उपन्यास की लिजा इसका जिक्र राजीव को भेजे पत्र में करती है- "अब तुम मुझे खोजने यहाँ मत आना। मेरी चिट्ठी पढ़कर पुलिस के पास भी मत जाना, क्योंकि मैं सोचती हूँ तुमने आज शाम बजाए पुलिस से उलझने के मेरे कोठे पर आना गवारा करके अच्छा ही किया। शायद तुम नहीं जानते, ये हमारी कमाई के सबसे बड़े उपभोक्ता हैं।"

13

पुलिस की डाकू से भी साँठगाँठ होती है। उनसे तो वेतन से भी अधिक गुना में रिश्तत ली जाती है। बदले में उन्हें संरक्षण भी दिया जाता है। 'तलाश' उपन्यास में शंकर सिंह जैसे डाकू की साँठ-गाँठ पुलिस से होती है जो पुलिसों को

रिश्तत दे देता है। हलके कक्का सहकारों को डाकू शंकर सिंह के बारे में बताता है, "शंकर सिंह ने डाकू जीवन में पुलिस महकमें को काफी रकम नजर की थी। बड़े-बड़े अफसरों से उसका मेलजोल था ही। बहुत ही शातिर किस्म का डाकू था वह उसने कई उन मौकों के फोटो खिंचवा लिए थे जबकि वह किसी अफसर के साथ या तो शराब पी रहा है, या उन्हें रुपये दे रहा है।" 14

अपने शिक्षा जैसे पवित्र क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार फैला हुआ है, विश्वविद्यालय जैसे शिक्षा के ऊँचे क्षेत्र भी इससे अछूते नहीं रहे। 'शब्द - बध' उपन्यास में नायक आनंद जब विश्वविद्यालय पहुँचता है तो देखता है कि किताबों की बोलियाँ लगाई जा रही हैं। 'इसी तरह वहाँ रेणू, यशपाल, प्रेमचन्द्र, अज्ञेय, जैनेंद्र, मोहन, सोहन, राही, बेराही, भ्रमर, मक्खियाँ, पतंगें, तिलचट्टे - सबके नामों की बोलियाँ लग रही थीं। विद्यार्थी क्या पढ़े यह विद्वान नहीं आढ़तिए तय कर रहे थे। विद्यार्थियों को क्या पढ़ना होगा यह प्रकाशक का प्रतिनिधि अपने बक्से में बंद नोटों के बण्डल गिनकर तय कर रहा था।" 15

निष्कर्ष:

आज भ्रष्टाचार एक ज्वलंत समस्या है। जीवन के सभी क्षेत्रों में हमें इसका शिकार होना पड़ता है। दरअसल स्वार्थ सिद्धि को प्राथमिकता देना तथा स्वार्थ के लिए विशेषण सहूलियत हासिल करना भ्रष्टाचार फैलाने के मुख्य कारण हैं। भ्रष्टाचार सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, व्यावसायिक सभी क्षेत्रों में समान रूप से व्याप्त है। भ्रष्टाचार के कलंक से जीवन का कोई भी कोना अछूता नहीं है। भारतीय प्रशासन सर्वाधिक भ्रष्ट हो गया है। यहाँ की सत्ता, प्रशासन, राजनीति और समाज पूरी तरह से भ्रष्ट हो चुका है। अब औसत भारतीय



नागरिक को भ्रष्टाचार मार्ग पर चलने में कोई भी आत्मिक कष्ट नहीं होता और ऐसा लगने लगा है जैसे समस्त भ्रष्टाचार के प्रति संवेदन हो गया है। अतः वीरेंद्र जैन ने अपने उपन्यासों में भ्रष्टाचार का यथार्थ चित्रण किया है।

संदर्भ सूची:

1. राम आहुजा – सामाजिक समस्याएं , रावत पब्लिकेशन, जयपुर प्र. 2019 पृ. 1
2. वही, पृ. 2
3. वही, पृ. 423
4. वीरेंद्र जैन – डूब, पृ. 229
5. वही, पृ. 22
6. वही, पृ. 233
7. वीरेंद्र जैन – पंचनामा, पृ. 104
8. वही, पृ. 171
9. वीरेंद्र जैन – सबसे बड़ा सिपहिया, पृ. 17
10. वही, पृ. 50
11. वही, पृ. 73
12. वीरेंद्र जैन – व्यथा-कथा (पहला सप्तक), पृ. 187
13. वही, पृ. 35
14. वीरेंद्र जैन – तलाश, पृ. 35
15. वीरेंद्र जैन – शब्धबध, पृ. 136